IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सहसंबंध

- डॉ.(श्रीमती) निशा श्रीवास्तव, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय) घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य नगर, दुर्ग
- डॉ.(श्रीमती) अनिता श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय) कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, दुर्ग
- कु. निर्मला अनंत, व्याख्याता, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेरला बेमेतरा (छ.ग)

सारांश: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में शोधकर्ता द्वारा दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का चयन किया गया । दुर्ग जिले के शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 200 कला संकाय, 200 विज्ञान संकाय एवं 200 वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी लिए गए । शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में डेटा के संग्रह के लिए छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के विद्यार्थी (ग्यारवीं) के कला एवं विज्ञान एवं वाणिज्य में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के 10 विं कक्षा के परीक्षा परिणाम का प्रयोग किया गया। समय प्रबंधन के अध्ययन के लिए प्रोफेसर डी एन सनसनवाल (2007) द्वारा निर्मित उपकरण, का उपयोग किया गया । अध्ययन में समय प्रबंधन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया ।

मुख्य शब्द :शैक्षिक **उपलब्धि एवं समय प्रबंधन**

प्रस्तावना –

अकादमिक उपलब्धि या अकादमिक प्रदर्शन वह सीमा है जिस तक एक छात्र, शिक्षक या संस्थान ने अपने छोटे या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है। माध्यमिक विद्यालय के डिप्लोमा और स्नातक की डिग्री जैसे शैक्षिक बेंचमार्क को पूरा करना शैक्षणिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है।

अकादमिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षाओं या निरंतर मूल्यांकन के माध्यम से मापा जाता है लेकिन इस पर कोई सामान्य सहमति नहीं है कि इसका सबसे अच्छा मूल्यांकन कैसे किया जाता है या कौन से पहलू सबसे महत्वपूर्ण हैं– प्रक्रियात्मक ज्ञान जैसे कौशल या घोषणात्मक ज्ञान जैसे तथ्य । इसके अलावा, अनिर्णायक परिणाम हैं जिन पर व्यक्तिगत कारक सफलतापूर्वक अकादमिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी करते हैं, स्कूल की

उपलब्धि के मॉडल विकसित करते समय परीक्षण चिंता, पर्यावरण, प्रेरणा और भावनाओं जैसे तत्वों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। अब, स्कूल अपने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर धन प्राप्त कर रहे हैं। अधिक शैक्षणिक उपलब्धियों वाले स्कूल को कम उपलब्धियों वाले स्कूल की तुलना में अधिक धन प्राप्त होगा।

समय प्रबंधन उपलब्ध समय की योजना बनाने और अधिक कुशलता से काम करने के लिए विशिष्ट कार्यों पर खर्च होने वाले समय को नियंत्रित करने की रणनीति है। प्रभावी समय प्रबंधन कुछ व्यक्तियों के लिए दूसरों की तुलना में आसान होता है, लेकिन हर कोई अपने समय प्रबंध कौशल में सुधार करने के लिए आदतों को विकसित कर सकता है। मजबूत समय प्रबंधन के बिना, काम और कुषलता को नुकसान हो सकता है। **जिम रोहन** के अनुसार धन से अधिक मूल्यवानसमय है, अधिक धन प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन अधिक समय प्राप्त नही कर सकते।

समय प्रबंधन बिना योजना के संभव नही है , योजना या नियोजन प्रबंधन का कार्य है जिसमें उद्देश्यों को शामिल करना और उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। नियोजन कई चरणों से युक्त एक प्रक्रिया है। समय प्रबंधन एक आदत है जो व्यक्ति समय के पाबंद रहते हैं वे जीवन में बहुत सफलता और ऊँचाईयाँ प्राप्त करते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक गुण है।

समय प्रबंधन का तात्पर्य समय के कुशलतापूर्वक प्रयोग से है ताकि इसका सबसे ज्यादा फायदा हो सके। यह जितना आसान लगता है उतना ही इस तकनीक का पालन करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जो समय का प्रबंधन कैसे किया जाता है यह सीख गया तो वह जीवन में लगभग सबकुछ हासिल कर सकता है। ऐसा कहा जाता है कि सफलता की दिशा में पहला कदम कुशल समय प्रबंधन है। जो अपने समय की ठीक से व्यवस्था नहीं कर सकता है वह हर कार्य में विफल हो जाता है। कुशल समय प्रबंधनकार्य कोसम्पन्न करता है, काम की गुणवत्ता सुधारता है और तनाव कम करने में भी सहायता करता है।

समय प्रबंधन से तात्पर्य समय को सही तरीके से उपयोग करने की योजना और प्रबंधन की तकनीक है। किसी भी क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिए अपने समय की ठीक से व्यवस्था करना आवश्यक है।

उद्देश्य

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

- **समय प्रबंधन**–विद्यार्थियों के समय प्रबंधन के संबंध में प्रदत्त के संग्रह के लिए प्रोफेसर डी एन सनसनवाल (2007) द्वारा निर्मित समय प्रबंधन मापनी का उपयोग किया गया । इस मापनी में कुल **36** पद है, जिसे चार आयामों में विभाजित किया गया है । यह आयाम, योजना, व्यवस्था,नेतृत्व एवं मूल्यांकन है।
- **शैक्षिक उपलब्धि**–शैक्षिक उपलब्धिके संबंध में प्रदत्त के संग्रह के लिए छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के विद्यालयों के विद्यार्थी (ग्यारवीं) के कला एवं विज्ञान एवं वाणिज्य में अध्ययनरत् विद्यार्थियों दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण

इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना था। इस उद्देश्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए पियर्सन का सहसंबंध गुणांक की संगणना की गई। इस संगणना का सारांश तालिका क्रमांक 1 में दिया गया है :

तालिका क्रमांक- 1

शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य सहसंबंध

चर	N	मध्यमान	मानक विचलन	(r)
समय प्रबंधन	600	93.83	7.97	**-.063^{NS}**
शैक्षिक उपलब्धि	600	88.40	9.07	

NS: सार्थक सहसंबंध नहीं

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध (–. 063)पाया गया, यह सहसंबंध सार्थक नहीं पाया गया। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शैक्षिक उपलब्धि एवं समय प्रबंधन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

समय प्रबंधन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया ।

व्याख्या: हालाँकि निष्कर्ष समय प्रबंधन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई संबंध नहीं दर्शाता है, कई छात्रों को स्कूल से विश्वविद्यालय जाने पर समय प्रबंधन में परेशानी होती है। अधिकांश छात्र अनजाने में ही अनावश्यक रूप से समय बर्बाद कर देते हैं। अपने समय की योजना न बनाने से समय की बर्बादी होती है। प्रभावी समय प्रबंधन द्वारा छात्र समय बचा सकते हैं। विद्यार्थी को समय का सदुपयोग करना चाहिए। अग्रिम योजना बनाकर कुशलतापूर्वक अध्ययन का समय निर्धारित करना चाहिए और योजना स्थगित नहीं करना चाहिए और इस संबंध में अनुशासन नहीं छोड़ना चाहिए। छात्रों के संदर्भ में, समय प्रबंधन, शैक्षणिक अर्थों में सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समय प्रबंधन से योजना बनाकर और समय का सही उपयोग करके,मनोवांछित सफलता प्राप्त करने की संभावना बढ़ेगी।

संदर्भित ग्रंथ सूचि

M. & Arora, D. (2009). Burnout, life satistfaction and quality of life among executives of Multi national companies. *Journal of the Indian Acadent of Applied Psychology*, January, 35(1),PP. 159 – 164.

Balchandran, M. (2007). Life satisfaction and alienation of elderly males and females. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*, 33 (2), PP-157 – 160.

Batainch, M. Z. (2014). A review of factors associated with student's lateness behavior and dealing strategies. *Journal of Education and Practice*, 5(2), P– 5.

Bennion, B. (2018). Attendance matters: The impact of tardiness on student success. *Athlos Academies*,

Cyril , V. A. (2015) . Time Management And Academic Achievement of Higher Secondary Students. *I-Manager's Journal O* , Vol. 10, No.3, P38 -43.

Diener, E., Oishi, S., Lucas, R. E. (2015). National accounts of subjective well-being. *Am. Psychology*, 70 (3).P. 333.

Fisher, A. T., & W Ng , E. C. (2013).Understanding Well-Being in Multi-Levels: A review, *Health, Culture and Society* , Volume 5, No. 1, PP. 308-323.

Jan, M. & Masood, T. (2008). An assessment of life satisfaction among women. *Study of Home Communication Science*, 2(1), PP.33 – 42.

Jiaojiang, L. (2008). Marrage and family life satisfaction. *Subaramuwa University Journal*, 8 (1), December, PP.1 – 17.

Khan, S.M. & Nasrullah, S.(2015). The Impact of Time Management on the Students' Academic Achievements, *Journal of Literature, Languages and inguisti An International Peer-reviewed Journal* ,Vol.11, pp 66-71.

Khan, S. (2018). A comparative study of risk taking ability of children of working and non-working mothers. *International Education and Research Journal. Vol: 04, issue 10.*

Khan, S. (2018). A comparative study of Reasoning Ability of Rural and Urban area students. *International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR). Vol. 05, Issue 04.*

Khan, S. (2018). A comparative study of reasoning Ability of male and female students. *International Education and Research Journal, Vol: 04, issue 11.*